दैनिक भास्कर

12-Sep-2019
सीकर Page 4

दैनिक भास्कर | राजस्थान

धरती धोरां री...लिखने वाले महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के जन्मशताब्दी समारोह पर मायड़ भाषा में पूरी खबर...क्योंकि सेठिया ने जीवनभर राजस्थानी भाषा की मान्यता व इसके प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया

उनके शब्दों में-खाली धड़ री कद हुवै चैरे बिना पिछाण, मायड़ भासा बिना क्या रों राजस्थान...

राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता ही हुसी सेठिया नै साची श्रद्धांजलि

भास्कर न्यूज | सुजानगढ़

राजस्थान रै राज्य गीत री भांत बरतीजण वाळी ख्यात रचना 'धरती धोरां री' रै सिरजणहार अर राजस्थानी भासा रा लूंठा कवि कन्हैयालाल सेठिया री जन्मशताब्दी रै मौके साहित्य अकादेमी नई दिल्ली अर मरूदेश संस्थान सुजानगढ़ री भेळप तेवड़ीजै साहित्यिक जळसै रै पैलै दिन बुधवार नै वक्ता अर मिजमानां कन्हैयालाल सेठिया नै मायड़ भासा रौ जबरौ कवि बतायनै उण रा मोकळा जस गाया। वठै ई उण रै मन री अधूरी आस राजस्थानी भासा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़णै पेटै ई खासा हथाई हुई।

सुजानगढ़ मांय कन्हैयालाल सेठिया री हेली में सरू हुयै इण जळसै में समूचै सूबै रा राजस्थानी लिखारा अर हेताळू भेळा हुयनै भासा अर साहित्य में सेठिया रै जोगदांन माथै खासा बंतळ करी। इण मौके पधांया मिजमानां कैयौ कै लगैटगै साठ बरस री खुद री लेखण-जातरा में सेठिया लूंठौ साहित्य सिरज्यौ अर उणरी बत्तीस पोथ्यां छपी। सेठिया री रचनावां अर दीठ उणनै विश्व-साहित्य रै बडै लिखारां री पंगत में ऊभौ करै। साहित्य-सिजरण रै साथै-साथै सेठिया देस री आजादी री जंग में ई भागीदारी राखी अर आजादी सूं पैलां ई महात्मा गांधी री सोच सूं प्रभावित हुयनै पुश्तैनी काम में हाथ बंटावणै सूं नाटता थकां हरिजन सेवा रौ संकळप लीन्हौ। मिजमानां कैयौ कै सेठिया जी री कविता 'कुण जमीन रौ धणी' अेक ढंग सूं करसां नै उणरी जमीनां रौ खातेदारी हक दिरावणै री नींव थरपी। सेठिया री कविता में वै बगावती तेवर हा कै उण री पोथी 'अग्निवीणा' नै उण बगत रा राजा जब्त करवायनै पाबंदी लगवाय दीन्ही। मिजमानां कैयौ कै फगत अेक गीत 'धरती धोरां री' ई सेठिया नै अमर कवि रै उणियारै थरप देवै, भलांई वै इण रै पछै और कीं ई नीं लिखता। इण मौके मौजूद कन्हैयालाल सेठिया रा सपूत अर सेठिया फाउंडेशन कोलकाता रा मुख्य न्यासी जयप्रकाश सेठिया कैयौ कै सेठियाजी रौ कड़ूंबौ घणौ लांबौ-चौड़ौ है। उण रौ जैविक पुत्र म्हैं हूं पण उण रा असल वंशज तौ वै सगळा सरस्वती रा सपूत है जिका उणरै सिरजण अर मायड़ भासा रै आगै बधावणै सारू कांम करै। राजस्थानी भासा परामर्श मंडल रा सदस्य भंवरसिंह सामौर आभार व्यक्त करयौ। उदघाटन सत्र रौ संचालन मरुदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा करयौ। इण मौके मरूदेश संस्थान रा सचिव कमलनयन तोषनीवाल, किशोर सैन, कन्हैयालाल डूंगरवाल, मुकेश रावतानी, सिद्धार्थ सेठिया, निदेशक सदस्य सुमनेश शर्मा, रतन सैन, पूनमचंद सारस्वत, दिनेश स्वामी व अरविंद विश्वेंद्रा आदि जळसै री व्यवस्थावां में सैयोग कीन्हौ। इण टाणै धूमधड़ाका चेरिटेबल ट्रस्ट कानी सूं जयप्रकाश सेठिया रो बसंत बोरड़ री अगुवाई मांय गौरव कठातला व लोकेश बोरड़ बहुमान करयौ।

च्यारं पोथ्यां लोक-निजर : इण मौके सुजानगढ़ री पूर्व प्राचार्या पुष्पलता शर्मा री पोथी ' अक्षर आकाश', लाडनूं रा डॉ विरेंद्र भाटी मंगल री पोथी 'भारत में महिला एवं मानव अधिकार', बीकानेर री डॉ. संजू श्रीमाली री पोथी 'कविवर कन्हैयालाल सेठिया का राजस्थानी काव्य दर्शन' अर मईनुदीन कोहरी नाचीज बीकानेर री पौथी अनमोल बेटियां ई लोक-निजर करीजी।

साहित्याकारां कैयोः सेठिया खुद री कविता सूं मिनखाचारै नै ई थरपणै री आफळ करी

समारोह मांय बोलतां साहित्य अकादेमी राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल रा संयोजक मधु आचार्य आशावादी।

साहित्य अकादेमी में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल रा संयोजक मधु आचार्य आशावादी बीज भासण में कैयौ कै किणी लिखारै रौ 100वौं जलमदिन उण री हेली मांय जायनै करणौ अेक अनोखी पहल अर साची सिरधांजळी है। वै सेठिया री ओळूं नै चिरस्थाई बणावणै री बात टोरता थकां कैयौ कै सुजानगढ़ में उण रै नांव सूं अेक संग्रहालय हुवणौ चाहीजै। दूरदर्शन रा पूर्व निदेशक नंद भारद्वाज री अध्यक्षता में तेवड़ीजै इण दोय दिन रै जलसै रै उद्घाटन सत्र रा सिरै मिजमान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का रा अध्यक्ष अर ख्यातनांव राजस्थानी लिखारा डॉ अर्जुन देव चारण कैयौ कै सिरजण में सेठिया री दीठ मिनखाचारै री ही। वै खुद री कविता सूं मिनखाचारै नै ई थरपणै री आफळ करी। वै राजस्थान री वीर-प्रसूता धरती रा अैड़ा कवि है जिकां री रचनावां उण री आंख्यां साम्हीं ई लोक-गीत बणगी। साहित्य अकादेमी रा सचिव डॉ. के श्रीनिवास राव शब्दां सूं जळसै में पधारयां मिजमानां अर श्रोतावां रौ स्वागत करयौ। उणां कैयौ कै सेठिया रौ मायड़ भौम सूं घणौ जुड़ाव हौ। अध्यक्षता करता थकां दूरदर्शन रा पूर्व निदेशक अर बडेरा लिखारा नंद भारद्वाज कैयौ कै सेठिया रौ साहित्य प्रेरणा देवणै वाळौ अर मारग दिखावणै वाळौ है। उणरौ सोचणै, बिचारणै अर लिखणै रौ अेक निरवाळौ ढंग हौ। मायड़ भौम अर मायड़ भासा पेटै उण रौ जुड़ाव अर पीड़ रचनावां में साव निगै आवै।

दैनिक भास्कर

12-Sep-2019
null Page 4

धरती धोरां री...लिखने वाले महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के जन्मशताब्दी समारोह पर मायड़ भाषा में पूरी खबर...क्योंकि सेठिया ने जीवनभर राजस्थानी भाषा की मान्यता व इसके प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया

उनके शब्दों में-खाली धड़ री कद हुवै चैरे बिना पिछाण, मायड़ भासा बिना क्या रो राजस्थान...

राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता ही हुसी सेठिया नै साची श्रद्धांजलि

दैनिक भास्कर

12-Sep-2019
चुरू Page 4

धरती धोरां री...लिखने वाले महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के जन्मशताब्दी समारोह पर मायड़ भाषा में पूरी खबर...क्योंकि सेठिया ने जीवनभर राजस्थानी भाषा की मान्यता व इसके प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास किया

उनके शब्दों में-खाली धड़ री कद हुवै चैरे बिना पिछाण, मायड़ भासा बिना क्या रों राजस्थान...

राजस्थानी भासा री संवैधानिक मान्यता ही हुसी सेठिया नै साची श्रद्धांजलि

भास्कर न्यूज | सुजानगढ़

राजस्थान रै राज्य गीत री भांत बरतीजण वाळी ख्यात रचना 'धरती धोरां री' रै सिरजणहार अर राजस्थानी भासा रा लूंठा कवि कन्हैयालाल सेठिया री जन्मशताब्दी रै मौके साहित्य अकादेमी नई दिल्ली अर मरूदेश संस्थान सुजानगढ़ री भेळप तेवड़ीजै साहित्यिक जळसै रै पैलै दिन बुधवार नै वक्ता अर मिजमानां कन्हैयालाल सेठिया नै मायड़ भासा री जबरी कवि बतायनै उण रा मोकळा जस गाया। वठै ई उण रै मन री अधूरी आस राजस्थानी भासा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़णै पेटै ई खासा हथाई हुई।

सुजानगढ़ मांय कन्हैयालाल सेठिया री हेली में सरू हुयै इण जळसै में समूचै सूबै रा राजस्थानी लिखारा अर हेताळू भेळा हुयनै भासा अर साहित्य में सेठिया रै जोगदांन माथै खासा बंतळ करी। इण मौके पधांया मिजमानां कैयो कै लगैटगै साठ बरस री खुद री लेखण-जातरा में सेठिया लूंठी साहित्य सिरज्यौ अर उणरी बत्तीस पोथ्यां छपी। सेठिया री रचनावां अर दीठ उणनै विश्व-साहित्य रै बडै लिखारां री पंगत में ऊभौ करै। साहित्य-सिजरण रै साथै-साथै सेठिया देस री आजादी री जंग में ई भागीदारी राखी अर आजादी सूं पैलां ई महात्मा गांधी री सोच सूं प्रभावित हुयनै पुश्तैनी काम में हाथ बंटावणै सूं नाटता थकां हरिजन सेवा री संकळप लीन्हौ। मिजमानां कैयो कै सेठिया जी री कविता 'कुण जमीन री धणी' अेक ढंग सूं करसां नै उणरी जमीनां री खातेदारी हक दिरावणै री नींव थरपी। सेठिया री कविता में वै बगावती तेवर हा कै उण री पोथी 'अग्निवीणा' नै उण बगत रा राजा जब्त करवायनै पाबंदी लगवाय दीन्ही। मिजमानां कैयी कै फगत अेक गीत 'धरती धोरां री' ई सेठिया नै अमर कवि रै उणियारै थरप देवै, भलांई वै इण रै पछै और कीं ई नीं लिखता। इण मौके मौजूद कन्हैयालाल सेठिया रा सपूत अर सेठिया फाउंडेशन कोलकाता रा मुख्य न्यासी जयप्रकाश सेठिया कैयी कै सेठियाजी री कड़ूंबौ घणौ लांबौ-चौड़ौ है। उण री जैविक पुत्र महैं हूं पण उण रा असल वंशज तौ वै सगळा सरस्वती रा सपूत है जिका उणरै सिरजण अर मायड़ भासा रै आगै बधावणै सारू काम करै। राजस्थानी भासा परामर्श मंडल रा सदस्य भंवरसिंह सामौर आभार व्यक्त करयौ। उदघाटन सत्र री संचालन मरुदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा करयौ। इण मौके मरूदेश संस्थान रा सचिव कमलनयन तोषनीवाल, किशोर सैन, कन्हैयालाल डूंगरवाल, मुकेश रावतानी, सिद्धार्थ सेठिया, निदेशक सदस्य सुमनेश शर्मा, रतन सैन, पूनमचंद सारस्वत, दिनेश स्वामी व अरविंद विश्वेंद्रा आदि जळसै री व्यवस्थावां में सैयोग कीन्हौ। इण टाणै धूमधड़ाका चेरिटेबल ट्रस्ट कानी सूं जयप्रकाश सेठिया रो बसंत बोरड़ री अगुवाई मांय गौरव कठातला व लोकेश बोरड़ बहुमान करयौ।

च्यारं पोथ्यां लोक-निजर : इण मौके सुजानगढ़ री पूर्व प्राचार्या पुष्पलता शर्मा री पोथी ' अक्षर आकाश', लाडनूं रा डॉ विरेंद्र भाटी मंगल री पोथी 'भारत में महिला एवं मानव अधिकार', बीकानेर री डॉ. संजू श्रीमाली री पोथी 'कविवर कन्हैयालाल सेठिया का राजस्थानी काव्य दर्शन' अर मईनुद्दीन कोहरी नाचीज बीकानेर री पोथी अनमोल बेटियां ई लोक-निजर करीजी।

समारोह मांय बोलतां साहित्य अकादेमी राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल रा संयोजक मधु आचार्य आशावादी।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया शताब्दी समारोह मांय पधारयां साहित्यकार।

साहित्याकारां कैयोः सेठिया खुद री कविता सूं मिनखाचारै नै ई थरपणै री आफळ करी

साहित्य अकादेमी में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल रा संयोजक मधु आचार्य आशावादी बीज भासण में कैयौ कै किणी लिखारै री 100वौं जलमदिन उण री हेली मांय जायनै करणौ अेक अनोखी पहल अर साची सिरधांजळी है। वै सेठिया री ओळूं नै चिरस्थाई बणावणै री बात टोरता थकां कैयौ कै मुजानगढ़ में उण रै नांव सूं अेक संग्रहालय हुवणौ चाहीजै। दूरदर्शन रा पूर्व निदेशक नंद भारद्वाज री अध्यक्षता में तेवड़ीजै इण दोय दिन रै जलसै रै उद्घाटन सत्र रा सिरै मिजमान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का रा अध्यक्ष अर ख्यातनांव राजस्थानी लिखारा डॉ अर्जुन देव चारण कैयौ कै सिरजण में सेठिया री दीठ मिनखाचारै री ही। वै खुद री कविता सूं मिनखाचारै नै ई थरपणै री आफळ करी। वै राजस्थान री वीर-प्रसूता धरती रा अैड़ा कवि है जिकां री रचनावां उण री आंख्यां सामहीं ई लोक-गीत बणगी। साहित्य अकादेमी रा सचिव डॉ. के श्रीनिवास राव शब्दां सूं जळसै में पधारयां मिजमानां अर श्रोतावां री स्वागत करयौ। उणां कैयौ कै सेठिया री मायड़ भौम सूं घणौ जुड़ाव हौ। अध्यक्षता करता थकां दूरदर्शन रा पूर्व निदेशक अर बडेरा लिखारा नंद भारद्वाज कैयौ कै सेठिया री साहित्य प्रेरणा देवणै वाळौ अर मारग दिखावणै वाळौ है। उणरी सोचणै, बिचारणै अर लिखणै री अेक निरवाळी ढंग हौ। मायड़ भौम अर मायड़ भासा पेटै उण री जुड़ाव अर पीड़ रचनावां में साव निगै आवै।

सेठिया रै सिरजण माथै पढ़ीज्या परचा : इण रै पछै जळसै रै पैलै सत्र में सेठिया रै सिरजण माथै परचा पढ़ीज्या। रायसिंहनगर रा बडेरा लिखारा डॉ मंगत बादल री अध्यक्षता में हुयै इण सत्र में बीकानेर री डॉ. उषा किरण सोनी 'सेठिया का व्यक्तित्व अर कृतित्व', नोहर रा डॉ. हाकम अली नागरा 'सेठिया का आधुनिक राजस्थानी को अवदान' अर श्री डूंगरगढ़ रा डॉ. चेतन स्वामी 'सेठिया का काव्य दर्शन' माथै आपरौ परचौ पढ़ता थकां सेठिया रै सिरजण पेटै बंतळ करी। कोटा रा बडेरा राजस्थानी लिखारा डॉ. अंबिका दत्त री अध्यक्षता में तेवड़ीजै दूजै सत्र में राजस्थान विवि रा डॉ. जगदीश गिरि 'सेठिया के राजस्थानी काव्य का रचना विधान' परलीका रा विनोद स्वामी 'सेठिया के राजस्थानी काव्य का सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्ष' अर बीकानेर रा डॉ. मदन सैनी 'सेठिया के राजस्थानी काव्य का कला पक्ष' विषय माथै आपरी महताऊ बातां राखी।

गुरुवार नै ई जारी रैसी बंतळ

जळसै रा संयोजक किशोर सैन बतायौ कै दूजै दिन गुरुवार दिनुगै दस जोधपुर रा कवि-आलोचक डॉ आईदान सिंह भाटी री अध्यक्षता में हुवणै वाळै तीजै सत्र में जोधपुर रा डॉ राजेंद्र बारहठ, बीकानेर रा विनोद सारस्वत अर संजू श्रीमाली आपरा परचा पढ़सी। दोफरै बारह बज्यां सरू हुवणै वाळै चौथै सत्र री अध्यक्षता उदयपुर रा बडेरा लिखारा कुंदन माली करसी। इण सत्र में उदयपुर रा शिवदान सिंह जोलावास, बीकानेर रा डॉ गौरीशंकर प्रजापत अर सुजानगढ़ डॉ डॉ घनश्याम नाथ कच्छावा आपरा परचा पढ़सी। साहित्य अकादेमी रै राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल रै संयोजक मधु आचार्य री अध्यक्षता में हुवणै वाळै समापन सत्र में लोहिया कॉलेज रा पूर्व प्राचार्य भंवरसिंह सामौर समापन वक्तव्य देसी।

कवि व लेखक बोले-सेठिया जैसे महान कवि की सुजानगढ़ में मूर्ति नहीं होना दुखद

साहित्यमनीषी कन्हैयालाल सेठिया के जन्मशतवार्षिकी पर शुरू हुई दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में पहुंचे ख्यातनाम कवियों व साहित्यकारों से भास्कर ने बातचीत की। सभी ने सुजानगढ़ में सेठिया की मूर्ति नहीं लगाने पर अफसोस जताया। कहा कि सुजानगढ़ के बेटे इस महान कवि की पहचान पूरे विश्व में होने के बाद भी अगर नगरपरिषद इनकी मूर्ति नहीं लगाती है तो ये सुजानगढ़ का दुर्भाग्य है।

साहित्य अकादेमी छापेगी कन्हैयालाल सेठिया पर पुस्तक : श्रीनिवास

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि सेठिया का साहित्य सृजन उनको महान साहित्यकारों की श्रेणी में लाकर खड़ा करता है। साहित्य अकादेमी सेठिया के व्यक्तित्व व कृतित्व पर भारतीय साहित्य के निर्माता शृंखला में उन पर एक राजस्थानी विनिबंध की पुस्तक का प्रकाशन कर रही है, जो दो-तीन महीने में प्रकाशित होगी।

राजस्थानी के कालजयी कवि हैं : चारण

भारत सरकार के राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के अध्यक्ष और वरिष्ठ नाट्यकार डॉ. अर्जुनदेव चारण ने कहा कि कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी भाषा के कालजयी कवि है और उनका लिखा साहित्य लोक साहित्य की श्रेणी में आता है। उनकी सुजानगढ़ में मूर्ति नहीं लगवाना घटिया दर्जे की राजनीति है।

सेठिया की मूर्ति स्थापना होनी ही चाहिएः कुंदनमाली

देश के ख्यातनाम लेखक व अहमदाबाद यूनिवर्सिटी के रिटायर्ड प्रो. कुंदनमाली ने कहा कि सेठिया दार्शनिक कवि है। उनकी कविताओं में कलावाद, यथावाद व जनावाद सम्मलित है। पूरे विश्व में चर्चित ऐसे व्यक्ति की उनके ही घर में मूर्ति के लिए जमीन नहीं देना गलत है।

उनके नाम से सुजानगढ़ रखता है पहचान : बादल

रायसिंहनगर के शिक्षाविद व लेखक डॉ. मंगत बादल ने कहा कि सेठिया की कविताओं में सहजता है। उनकी मूर्ति स्थापना का काम जन्मशताब्दी वर्ष में ही होना चाहिए। उनके नाम से ही सुजानगढ़ देशभर में पहचान रखता है।

राजस्थानी व हिंदी के कवि डॉ. अंबिकादत्त ने

कहा कि कबीर व कन्हैयालाल दोनों को किसी भी उम्र का व्यक्ति पढ़कर समझ सकता है। ये सुजानगढ़ के लिए गौरव की बात है कि यह सेठिया की जन्मस्थली रही है और सेठिया के लिए दुर्भाग्य की बात है कि उनके नगर में उनकी मूर्ति स्थापना को लेकर अड़चने लगाई जा रही है।

दैनिक भास्कर

12-Sep-2019
बीकानेर Page 9

राजस्थानी री मान्यता ही हुसी सेठिया नै साची श्रद्धांजलि

भास्कर न्यूज | सुजानगढ़

राजस्थान रै राज्य गीत री भांत बरतीजण वाळी ख्यात रचना 'धरती धोरां री' रै सिरजणहार अर राजस्थानी भासा रा लूंठा कवि कन्हैयालाल सेठिया री जन्मशताब्दी रै मौके साहित्य अकादेमी नई दिल्ली अर मरूदेश संस्थान सुजानगढ़ री भेळप तेवड़ीजै साहित्यिक जळसै रै पैलै दिन बुधवार नै वक्ता अर मिजमानां कन्हैयालाल सेठिया नै मायड़ भासा रौ जबरौ कवि बतायनै उण रा मोकळा जस गाया। वठै ई उण रै मन री अधूरी आस राजस्थानी भासा नै संविधान री आठवीं अनुसूची में जोड़णै पेटै ई खासा हथाई हुई।

सुजानगढ़ मांय कन्हैयालाल सेठिया री हेली में सरू हुयै इण जळसै में समूचै सूबै रा राजस्थानी लिखारा अर हेताळू भेळा हुयनै भासा अर साहित्य में सेठिया रै जोगदांन माथै खासा बंतळ करी। इण मौके पधांया मिजमानां कैयौ कै लगैटगै साठ बरस री खुद री लेखण-जातरा में सेठिया लूंठौ साहित्य सिरज्यौ अर उणरी बत्तीस पोथ्यां छपी। सेठिया री रचनावां अर दीठ उणनै विश्व-साहित्य रै बडै लिखारां री पंगत में ऊभौ करै। साहित्य-सिजरण रै साथै-साथै सेठिया देस री आजादी री जंग में ई भागीदारी राखी अर आजादी सूं पैलां ई महात्मा गांधी री सोच सूं प्रभावित हुयनै पुश्तैनी काम में हाथ बंटावणै सूं नाटता थकां हरिजन सेवा रौ संकळप लीन्हौ। मिजमानां कैयौ कै सेठिया जी री कविता 'कुण जमीन रौ धणी' अेक ढंग सूं करसां नै उणरी जमीनां रौ खातेदारी हक दिरावणै री नींव थरपी। सेठिया री कविता में वै बगावती तेवर हा कै उण री पोथी 'अग्निवीणा' नै उण बगत रा राजा जब्त करवायनै पाबंदी लगवाय दीन्ही। मिजमानां कैयौ कै फगत अेक गीत 'धरती धोरां री' ई सेठिया नै अमर कवि रै उणियारै थरप देवै, भलांई वै इण रै पछै और कीं ई नीं लिखता। इण मौके मौजूद कन्हैयालाल सेठिया रा सपूत अर सेठिया फाउंडेशन कोलकाता रा मुख्य न्यासी जयप्रकाश सेठिया कैयौ कै सेठियाजी रौ कड़ूंबौ घणौ लांबौ-चौड़ौ है। उण रौ जैविक पुत्र म्हैं हूं पण उण रा असल वंशज तौ वै सगळा सरस्वती रा सपूत है जिका उणरै सिरजण अर मायड़ भासा रै आगै बधावणै सारू कांम करै। राजस्थानी भासा परामर्श मंडल रा सदस्य भंवरसिंह सामौर आभार व्यक्त करयौ। उदघाटन सत्र रौ संचालन मरुदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा करयौ। इण मौके मरूदेश संस्थान रा सचिव कमलनयन तोषनीवाल, किशोर सैन, कन्हैयालाल डूंगरवाल, मुकेश रावतानी, सिद्धार्थ सेठिया, निदेशक सदस्य सुमनेश शर्मा, रतन सैन, पूनमचंद सारस्वत, दिनेश स्वामी व अरविंद विश्वेंद्रा आदि जळसै री व्यवस्थावां में सैयोग कीन्हौ। इण टाणै धूमधड़ाका चेरिटेबल ट्रस्ट कानी सूं जयप्रकाश सेठिया रो बसंत बोरड़ री अगुवाई मांय गौरव कठातला व लोकेश बोरड़ बहुमान करयौ।

च्यारं पोथ्यां लोक-निजर : इण मौके सुजानगढ़ री पूर्व प्राचार्या पुष्पलता शर्मा री पोथी ' अक्षर आकाश', लाडनूं रा डॉ विरेंद्र भाटी मंगल री पोथी 'भारत में महिला एवं मानव अधिकार', बीकानेर री डॉ. संजू श्रीमाली री पोथी 'कविवर कन्हैयालाल सेठिया का राजस्थानी काव्य दर्शन' अर मईनुदीन कोहरी नाचीज बीकानेर री पोथी अनमोल बेटियां ई लोक-निजर करीजी।

साहित्याकारां कैयोः सेठिया खुद री कविता सूं मिनखाचारै नै ई थरपणै री आफळ करी

साहित्य अकादेमी में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल रा संयोजक मधु आचार्य आशावादी बीज भासण में कैयौ कै किणी लिखारै रौ 100वौं जलमदिन उण री हेली मांय जायनै करणौ अेक अनोखी पहल अर साची सिरधांजळी है। वै सेठिया री ओळूं नै चिरस्थाई बणावणै री बात टोरता थकां कैयौ कै सुजानगढ़ में उण रै नांव सूं अेक संग्रहालय हुवणौ चाहीजै। दूरदर्शन रा पूर्व निदेशक नंद भारद्वाज री अध्यक्षता में तेवड़ीजै इण दोय दिन रै जलसै रै उद्घाटन सत्र रा सिरै मिजमान राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का रा अध्यक्ष अर ख्यातनांव राजस्थानी लिखारा डॉ अर्जुन देव चारण कैयौ कै सिरजण में सेठिया री दीठ मिनखाचारै री ही। वै खुद री कविता सूं मिनखाचारै नै ई थरपणै री आफळ करी। साहित्य अकादेमी रा सचिव डॉ. के श्रीनिवास राव शब्दां सूं जळसै में पधारयां मिजमानां अर श्रोतावां रौ स्वागत करयौ। उणां कैयौ कै सेठिया रौ मायड़ भौम सूं घणौ जुड़ाव हौ। अध्यक्षता करता थकां दूरदर्शन रा पूर्व निदेशक नंद भारद्वाज कैयौ कै सेठिया रौ साहित्य प्रेरणा देवणै वाळौ अर मारग दिखावणै वाळौ है। उणरौ सोचणै, बिचारणै अर लिखणै रौ अेक निरवाळौ ढंग हौ।

सेठिया रै सिरजण माथै पढ़ीज्या परचा : इण रै पछै जळसै रै पैलै सत्र में सेठिया रै सिरजण माथै परचा पढ़ीज्या। रायसिंहनगर रा बडेरा लिखारा डॉ मंगत बादल री अध्यक्षता में हुयै इण सत्र में बीकानेर री डॉ. उषा किरण सोनी 'सेठिया का व्यक्तित्व अर कृतित्व', नोहर रा डॉ. हाकम अली नागरा 'सेठिया का आधुनिक राजस्थानी को अवदान' अर श्री डूंगरगढ़ रा डॉ. चेतन स्वामी 'सेठिया का काव्य दर्शन' माथै आपरौ परचौ पढता थकां सेठिया रै सिरजण पेटै बंतळ करी। कोटा रा डॉ. अंबिका दत्त री अध्यक्षता में राजस्थान विवि रा डॉ. जगदीश गिरि 'सेठिया के राजस्थानी काव्य का रचना विधान' परलीका रा विनोद स्वामी 'सेठिया के राजस्थानी काव्य का सांस्कृतिक एवं सामाजिक पक्ष' अर बीकानेर रा डॉ. मदन सैनी 'सेठिया के राजस्थानी काव्य का कला पक्ष' विषय माथै आपरी महताऊ बातां राखी।

देश की आजादी में सेठिया का योगदान सदैव याद रखा जाएगा : श्रीनिवास राव

'महिला और मानवाधिकार' व 'अनमोल बेटियां' पुस्तकों का विमोचन हुआ

■ कन्हैयालाल सेठिया जन्मशताब्दी समारोह शुरू

सुजानगढ़ में महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के 100वें जन्म शताब्दी पर आयोजित कार्यक्रम को साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के सचिव डॉ. के श्रीनिवास राव ने संबोधित किया।

सुजानगढ़/लाडनूं, (निं)। साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और मरुदेश संस्थान की ओर से बुधवार को महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के 100 वें जन्मशताब्दी समारोह के तहत दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ कन्हैयालाल सेठिया की हवेली सुजानगढ़ में आयोजित साहित्यकार सम्मेलन में हुआ।

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली एवं मरुदेश संस्थान, सुजानगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस दो दिवसीय राष्ट्रीय साहित्यकार सम्मेलन में देश भर से साहित्यकार, लेखक भाग ले रहे हैं। संगोष्ठी का शुभारंभ पर स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी नई दिल्ली के सचिव डॉ. के.श्रीनिवास राव ने कहा कि जन मन के कवि कन्हैयालालसेठिया का मातृ भूमि से गहरा जुड़ाव था। उन्होंने कहा कि सेठिया के साहित्य में लोकमंगल निहित है। उन्होंने जब भी कोई राष्ट्रीय समस्या हुई या मानवता पर कोई संकटआया तब-तब अपनी ओजपूर्ण भाषा से काव्य के माध्यम से जनचेतना को जागृत किया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में और आजादी के बाद कन्हैयालाल सेठिया का राष्ट्र को जो योगदान है वो सदैव स्मरण रखा जाएगा । जन्मशताब्दीकी संगोष्ठी के मुख्य अतिथि भारत सरकार के राष्ट्रीय नाट्य अकादेमी के चेयरमैन डॉ.अर्जुनदेव चारण ने कहा कि कन्हैयालाल सेठिया का दृष्टिकोण मानवता वादी था। कार्यक्रम के अध्यक्ष दूरदर्शन के पूर्व निदेशक व वरिष्ठ कवि नंद भारद्वाज ने कहा कि सेठिया का साहित्य प्रेरणास्पद व पथ प्रदर्शक भी रहा है। समारोह में बीज वक्ता राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल साहित्य अकादेमी के संयोजक मधु आचार्य आशावादी ने कहा कि कन्हैयालाल सेठिया के 100वें जन्मदिन को उनकी निजी हवेली में समारोहपूर्वक आयोजित करना अपने आप में एक अनूठी पहल और किसी कवि को सच्ची श्रद्धांजलि है।

कार्यक्रम में सुजानगढ़ के पूर्व प्रधानाचार्य पुष्पलता शर्मा के हाइकु संग्रह अक्षर आकाश, बीकानेर की कॉलेज व्याख्याता डॉ. संजूश्री माली की पुस्तक कविता कन्हैयालाल सेठिया का काव्यदर्शन व लाडनूं के लेखक डॉ. वीरेंद्र भाटी मंगल की पुस्तक 'महिला और मानवाधिकार' सहित बीकानेर के ही मईनुद्दीन कोहरी नाचीज बीकानेरी की 'अनमोल बेटियां' हिंदी राजस्थानी कविता संग्रह का विमोचन अतिथियों ने किया। समारोह में प्रथम सत्र में वरिष्ठ लेखक डॉ. मंगल बादल की अध्यक्षता में बीकानेर की डॉ. उमा करण सोनी ने सेठिया के व्यक्तित्व व कृतित्व, नोहर के हाकम अली जगा ने सेठिया का आधुनिक राजस्थानी कविता का अवदान व डूंगरगढ़ के डॉ. चेतन स्वामी ने सेठिया का काव्य दर्शन पर पत्रवाचन किया।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया का 100वां जन्मशताब्दी समारोह

जनमन के कवि कन्हैयालाल सेठिया का मातृ भूमि से था गहरा जुड़ाव: डॉ. के.श्रीनिवास राव

सुजानगढ़. कन्हैयालाल सेठिया के जन्मशताब्दी समारोह को लेकर आयोजित संगोष्ठी में मौजूद साहित्य प्रेमी।

सुजानगढ़. संगोष्ठी को सम्बोधित करते के. श्रीनिवास राव।

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

सुजानगढ़. साहित्य अकादेमी नई दिल्ली और मरुदेश संस्थान सुजानगढ़ की ओर से बुधवार को महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के 100वें जन्मशताब्दी समारोह के तहत दो दिवसीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। स्वागत भाषण प्रस्तुत करते सचिव डॉ. के.श्रीनिवास राव ने कहा कि जन मन के कवि कन्हैयालाल सेठिया का मातृ भूमि से गहरा जुड़ाव था। उन्होंने कहा कि सेठिया के साहित्य में लोकमंगल नीहित है।

उन्होंने जब भी कोई राष्ट्रीय समस्या हुई या मानवता पर कोई संकट आया तब-तब अपनी ओजपूर्ण भाषा से काव्य के माध्यम से जनचेतना को जागृत किया। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में और आजादी के बाद कन्हैयालाल सेठिया का राष्ट्र को जो योगदान है वो सदैव स्मरण रखा जाएगा और साहित्य अकादेमी उनके व्यक्तित्व व कृतित्व को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास करेगी।

जन्म शत वार्षिकी संगोष्ठी के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय नाट्य अकादेमी के चेयरमैन डॉ.अर्जुनदेव चारण ने कहा कि सेठिया का दृष्टिकोण मानवतावादी था और उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से मानवीयता के पक्ष को मजबूत किया है। वे ऐसे जन कवि हुए हैं, जिनके जीवनकाल में ही उनके लिखे गीत लोकगीत बन गए। कार्यक्रम के अध्यक्ष दूरदर्शन के पूर्व निदेशक व वरिष्ठ कवि नंद भारद्वाज ने कहा कि सेठिया का साहित्य प्रेरणास्पद व पथ प्रदर्शक भी रहा है। उनका सोचने विचारने और लिखने का ढंग सबसे अलग था।

उनके मन में मातृ भूमि और मातृ भाषा के प्रति पीड़ा परिलक्षित होती रही। समारोह में बीज वक्तव्य राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल साहित्य अकादेमी के संयोजक मधु आचार्य आशावादी ने कहा कि सेठिया के 100वें जन्मदिन को उनकी निजी हवेली में समारोहपूर्वक आयोजित करना अपने आप में एक अनूठी पहल और किसी कवि को सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होंने सेठिया की स्मृति को चिरस्थाई बनाने की मांग करते सुजानगढ़ में उनके नाम से कोई संग्रहालय बनाने की भी बात कही। समारोह में कन्हैयालाल सेठिया फाउंडेशन कोलकता के मुख्य न्यासी और सेठिया के पुत्र जयप्रकाश सेठिया ने धन्यवाद ज्ञापित करते कहा कि सेठिया का परिवार बहुत विस्तृत है।

वे केवल उनके जैविक पुत्र हैं, बल्कि उनके असली वंशज तो ये सभी सरस्वती पुत्र हैं, जो उनके सृजन को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत हैं। अकादेमी के भाषा परामर्श मंडल केसदस्य प्रो. भंवरसिंह सामौर ने आभार व्यक्त किया। प्रथम सत्र का संचालन मरुदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने किया। अतिथियों का स्वागत संस्थान के किशोर सैन, सुमनेश शर्मा, रतनलाल सैन, पूनमचंद सारस्वत, सिद्धार्थ सेठिया, सीए हनुमानमल सेठिया, विद्याधर पारीक, कन्हैयालाल डूंगरवाल, गिरधर शर्मा, शम्सुद्दीन स्नेही, बजरंगलाल जेदू आदि ने किया। कार्यक्रम के दौरान धुमधड़ाका चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से जयप्रकाश सेठिया का अभिनंदन किया।

पुस्तकों का विमोचन

कार्यक्रम में सुजानगढ़ के पूर्व प्रधानाचार्य पुष्पलता शर्मा के हाइकू संग्रह अक्षर अक्षर, बीकानेर की कॉलेज व्याख्याता डॉ. संजुश्री मानी की पुस्तक कविवर कन्हैयालाल सेठिया का काव्यदर्शन व लाडनूं के लेखक डॉ. विरेंद्र भाटी मंगल की पुस्तक महिला और मानवाधिकारसहित बीकानेर के ई. मईनुद्दीन कोहरी नाचीज बीकानेरी की अनमोल बेटियां हिंदी राजस्थानीकविता संग्रह का विमोचन अतिथियों ने किया।

सेठिया के साहित्य पर हुए आलेख पाठ

समारोह में प्रथम सत्र में वरिष्ठ लेखक डॉ. मंगल बादल की अध्यक्षता में बीकानेर की डॉ. उमा कान्त सोनी ने सेठिया के व्यक्तित्व व कृतित्व, नोहर के हरून अली नागरा ने सेठिया का आधुनिक राजस्थानी कविता का अवदान व डूंगरगढ़ के डॉ. चेतन स्वामी ने सेठिया का काव्य दर्शन पर पत्रवाचन किया। संध्याकालीन दूसरे सत्र में कोटा के लेखक डॉ. अंबिकादत्त की अध्यक्षता में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के डॉ. जगदीश गिरी ने सेठिया के राजस्थानी काव्य का रचना विधान, परलिका गांव के विनोद स्वामी ने सेठिया के राजस्थानी काव्य के जनवादी पक्ष और पूर्व कॉलेज व्याख्याता डॉ. मदन सैनी ने राजस्थानी काव्य के कला पक्ष पर पत्रवाचन किया। दोनों सत्रों का संचालन [illegible] किराडू व रतनलाल सैन ने किया।

दैनिक भास्कर
13-Sep-2019
null Page 4

महान कवि व स्वतंत्रता सेनानी कन्हैयालाल सेठिया की सुजानगढ़ में प्रतिमा लगाने के लिए 11 साल से मांग उठ रही लेकिन नगरपरिषद नहीं दे रही जमीन

जिले के सांसद व विधायक बोले-दुर्भाग्य है कि जन्मस्थली पर महाकवि सेठिया की प्रतिमा नहीं है, नगरपरिषद की जिम्मेदारी है कि उन्हें ये सम्मान दें, हम राज्य सरकार को लिखेंगे पत्र

भास्कर न्यूज | सुजानगढ़

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की उनके घर यानी शहर में प्रतिमा नहीं होना सुजानगढ़ का दुर्भाग्य है। पिछले 11 साल से उनकी प्रतिमा लगाने को लेकर बार-बार मांग उठ रही है। नगरपरिषद की ओर से जमीन उपलब्ध नहीं करवाने की वजह से पूरा मामला अटका पड़ा है। सुजानगढ़ के महान कवि और स्वतंत्रता सेनानी को हक नहीं मिलना पूरे शहर ही नहीं, बल्कि जिले के लिए अफसोसजनक है। महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की प्रतिमा लगाने को लेकर दैनिक भास्कर ने जिले के सभी विधायकों व सांसद से बातचीत की। सभी जनप्रतिनिधियों ने सेठिया को देश का बहुत चर्चित और साहित्य मनीषी बताया। बोले- कि वे राज्य सरकार से इस मामले को लेकर बात करेंगे। साथ ही नगरपरिषद को खुद आगे आकर जमीन देने की बात कही। जानिए किसने क्या कहा...

मैं प्रयास करूंगा, मुझसे समिति के सदस्य आकर मिले : मंत्री मेघवाल

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की प्रतिमा लगाने के लिए पदाधिकारी मुझसे मिले। कुछ जगहों को लेकर कुछ अड़चने हैं। मैं प्रयास करूंगा कि सेठियाजी की प्रतिमा लगे।

-मा. भंवरलाल मेघवाल, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री व विधायक सुजानगढ़

सुजानगढ़ का दुर्भाग्य है : राठौड़

कन्हैयालाल सेठिया नाम सुनते ही सुजानगढ़ जहन में आता है। यहां के इस महान व्यक्तित्व के बेटे की प्रतिमा लगाने के लिए जमीन का छोटा सा टुकड़ा नहीं देना दुर्भाग्य है। मैं राज्य सरकार से इस बारे में बात करूंगा। नगरपरिषद की ये अहम जिम्मेदारी है, जिसे उन्हें निभानी चाहिए।

-राजेंद्र राठौड़, उपनेता प्रतिपक्ष, व विधायक चूरू

मुख्यमंत्री को पत्र लिखूंगा, सेठियाजी की प्रतिमा लगनी चाहिए : पं. शर्मा

पूरे देश में राजस्थानी भाषा को जिंदा रखने वाले एक मात्र कन्हैयालाल सेठिया है। आज उनके गीत विश्वभर में चर्चित हैं। सुजानगढ़ में सेठिया की प्रतिमा लगनी ही चाहिए। मुख्यमंत्री को पत्र लिखूंगा कि वे नगरपरिषद को आदेश करें कि जगह देकर उनकी प्रतिमा लगाई जाए।

-पं. भंवरलाल शर्मा, विधायक, सरदारशहर

नगरपरिषद खुद आगे आए : महर्षि

सेठिया सुजानगढ़ के ही नहीं पूरे भारत की शान है। सुजानगढ़ जन्मस्थली है, नगरपरिषद की जिम्मेदारी बनती है। इस मसले को लेकर राज्य सरकार को लिखूंगा। इतने बड़े आदमी के लिए नगरपरिषद को ये सम्मान देना ही चाहिए।

-अभिनेष महर्षि, विधायक, रतनगढ़

सुजानगढ़ का नाम सेठियाजी पूरी दुनिया में चर्चित किया : पूनिया

महाकवि सेठियाजी की वजह से ही सुजानगढ़ का नाम देश और दुनिया में चर्चित हुआ है। सुजानगढ़ में प्रतिमा लगती है तो लोगों को प्रेरणा ही मिलेगी। ऐसे महान व्यक्ति की मूर्ति लगनी चाहिए। मैं भी राज्य सरकार से आग्रह करूंगी। नगरपरिषद को भूमिका निभानी चाहिए।

कृष्णा पूनिया, विधायक, सादुलपुर

असली हकदार हैं सेठिया : बुडानिया

सेठिया देश ही नहीं विश्व के चर्चित महाकवि थे। उनकी मूर्ति के लिए मैं पर्सनल सीएम से बात करुंगा। सुजानगढ़ विधायक व नगरपरिषद को भी लिखूंगा कि वे मूर्ति के लिए जगह दें। मूर्ति लगाने के असली हकदार हैं कन्हैयालाल सेठिया।

-नरेंद्र बुडानिया, विधायक, तारानगर

मैं सांसद निधि से प्रतिमा लगाने व अन्य खर्चे के लिए तैयार हूं : सांसद

मुझे गर्व है कि मैं ऐसे लोकसभा क्षेत्र का सांसद हूं, जहां से कन्हैयालाल सेठिया जैसे

महान कवि व स्वतंत्रता सेनानी का जन्म हुआ। सुजानगढ़ में अगर इनकी प्रतिमा नहीं लगेगी, तो फिर किसकी लगेगी। सेठिया की प्रतिमा लगाने के लिए जगह को लेकर राज्य सरकार, कलेक्टर व नगरपरिषद को लिखूंगा। प्रतिमा या अन्य खर्चे के लिए सांसद निधि कोष से रुपए लगाने के लिए भी तैयार हूं।

-राहुल कस्वा, सांसद, चूरू

दैनिक भास्कर
13-Sep-2019
null Page 4

मायड़ भासा नै मजबूत करणै रै संकळप साथै हुयौ जळसौ

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया जन्मशतवर्षिकी माथै हुई संगोष्ठी मांय पढ़ीज्या परचा

सुजानगढ़. समारोह मांय बोलतां मरुदेश संस्थान रा अध्यक्ष डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा। इण कार्यक्रम मायं पधारयां साहित्यकार।

भास्कर न्यूज | सुजानगढ़

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली अर मरूदेश संस्थान री भेळप में महाकवि कन्हैयालाल सेठिया जन्मशतवर्षिकी रै मौके तेवड़ीजी दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी मायड़ भासा नै मजबूत करणै रै संकळप साथै गुरुवार नै सम्पन्न हुई। खुद कन्हैयालाल सेठिया री निजी हेली में हुयै इण जळसै रै दूजै दिन रै पैलै सत्र री अध्यक्षता करता थकां बडेरा कवि डॉ. आईदानसिंह भाटी कैयौ कै सेठिया री जयंती माथै आपांनै औ विचार अवस करणौ चाहीजै कै आपां आपणै घर-आंगणै मायड़ भासा में ई आपसरी री बंतळ करां। भासा अर संस्कृति नै बचावणै रौ जतन आपां नै करणौ चाहीजै। उणां कैयौ कै सेठिया रै साहित्य में आपांनै उण ई राष्ट्रवाद रौ दरसाव हुवै जिकौ वेद अर पुराणां में आपां देखां। इणी सत्र मांय जोधपुर रा डॉ. राजेन्द्र बारहठ 'सेठिया के राजस्थानी काव्य की काव्यगत विशेषताएं', बीकानेर रा विनोद सारस्वत 'सेठिया के राजस्थानी काव्य की भाव भूमि' अर डॉ. संजू श्रीमाली 'सेठिया के राजस्थानी काव्य के प्रतीक विधान' माथै आपरा परचा पढ़्या। गुरुवार दोफारां पछै दूजै सत्र री अध्यक्षता करता थकां अहमदाबाद रा शिक्षाविद अर राजस्थानी आलोचक-लिखारा डॉ. कुन्दन माली कैयौ कै कन्हैयालाल सेठिया रै काव्य में घणै जबरै बिंब, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा अर प्रतीक रा सोवणा चितरांण देखणनै मिलै। इण सत्र में उदयपुर रा डॉ. शिवदान सिंह जोलावास 'सेठिया के काव्य में जीवन दृष्टि', बीकानेर रा 'डॉ. गौरीशंकर प्रजापत 'सेठिया के राजस्थानी काव्य में रूपगत विकास' अर सुजानगढ़ रा डॉ. घनश्यामनाथ कच्छावा 'सेठिया के काव्य में प्रकृति और परिवेश' माथै आपरा परचा पढ़्या।

आज रौ औ दिन उणनै हरमेस याद रैयसी

गुरुवार आथणगै समापन समारोह री अध्यक्षता करता थकां साहित्य अकादेमी री राजस्थानी भाषा परामर्श समिति रा संयोजक मधु आचार्य आशावादी कैयौ कै सेठिया आधुनिक साहित्य जगत रै सिरैनांव लिखारां में गिणीजै जिका आपरी कविता रै मारफत साहित्य नै नवी खिमता, दीठ अर ढंग दीन्हौ है। समापन वक्तव्य में राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल रा सदस्य भंवरसिंह सामौर सेठिया नै एक सत री हेर मांय लाग्यौ रैवण वाळौ लिखारौ बतायौ। कन्हैयालाल सेठिया रा बेटा जयप्रकाश सेठिया गळगळा हुयनै कैयौ कै आज रौ औ दिन उणनै हरमेस याद रैयसी।

च्यार न्यारै-न्यारै सत्रां में बारह परचा पढ़ीज्या : संगोष्ठी रै च्यार न्यारै-न्यारै सत्रां में कन्हैयालाल सेठिया रै सिरजण-संसार माथै बारह परचा पढ़ीज्या। संचालन रतन सैन कर्यौ। इण मौकै कार्यक्रम रा संयोजक किशोर सैन, सुमनेश शर्मा, कमलनयन तोषनीवाल, अरविंद विश्वेन्द्रा, दिनेश स्वामी, तापड़िया बालिका महाविद्यालय जसवंतगढ़ री प्राचार्य डॉ. पायल वर्मा, इन्द्रा बिहानी, सोना देवी सेठिया कन्या कॉलेज री प्राचार्य डॉ. साधना सिंह, डॉ. जयश्री सेठिया, बीकानेर रा अजीत राज, कन्हैयालाल सेठिया फाउन्डेशन रा सिद्धार्थ सेठिया, तनसुख राय रामपुरिया, गणेश मंडावरिया, भंवरलाल सुंगत आद मिजमानां रौ स्वागत कर्यौ।

सेठिया के विभिन्न साहित्यिक विषयों पर हुआ 12 पत्रों का वाचन

पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया जन्मशत वार्षिकी पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

अखिल प्रजापत

सुजानगढ़,(पंजाब केसरी): साहित्य अकादेमी नई दिल्ली व मरुदेश संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में महाकवि कन्हैयालाल सेठिया जन्मशतवार्षिकी पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी गुरुवार शाम को संपन्न हुई। इस संगोष्ठी में अलग-अलग चार सत्रों में कन्हैयालाल सेठिया के साहित्य पर पूरे देश से आये साहित्यकारों ने बारह पत्र वाचन किए जिससे श्रोताओं को सेठिया के साहित्य को अधिक जानने व समझने का अवसर मिला।

कन्हैयालाल सेठिया की निजी हवेली में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन के पहले सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ कवि डॉ. आईदान सिंह भाटी ने कहा कि सेठिया की जयन्ती पर हमें यह विचार अवश्य करना चाहिए कि आज के बदलते परिवेश में हम कम से कम अपने घर आंगन में

कार्यक्रम को सम्बोधित करते डॉ. आईदान सिंह भाटी।

राजस्थानी भाषा में आपसी संवाद करें। भाटी ने कहा कि कन्हैयालाल सेठिया की कविताओं में राष्ट्रवाद के दर्शन होते है।

जोधपुर के डॉ. गजेन्द्र बारहठ ने सेठिया के राजस्थानी काव्य की काव्यगत विशेषताएं,बीकानेर के विनोद सारस्वत ने सेठिया के राजस्थानी काव्य की भाव भूमि और डॉ. मंजू श्रीमाली सेठिया के राजस्थानी काव्य के प्रतीक विधान पर अपने पत्र वाचन प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता करते हुए अहमदाबाद के शिक्षाविद् व राजस्थानी लेखक डॉ. कुन्दन माली ने कहा कि कन्हैयालाल सेठिया का काव्य में बहुत अधिक बिंब, रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा और प्रतीक के सुन्दर चित्र देखने को मिलते है।

उदयपुर के डॉ. शिवदान सिंह जोलावास ने सेठिया के काव्य में जीवन दृष्टि, बीकानेर के डॉ. गौरीशंकर प्रजापत ने सेठिया के राजस्थानी काव्य में रूपगत विकास और सुजानगढ़ के डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने सेठिया के काव्य में प्रकृति और परिवेश विषय पर अपने प्रभावशाली पत्र पढ़े। शाम को आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के राजस्थानी भाषा परामर्श समिति के संयोजक मधु आचार्य आशावादी ने कहा की सेठिया आधुनिक साहित्य जगत के सिरमौर साहित्यकारों में से एक है। समापन वक्तव्य देते हुए अकादेमी के राजस्थानी भाषा परामर्श मंडल के सदस्य भंवर सिंह सामौर ने सेठिया की पारिवारिक जानकारी और अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए सेठिया को एक सत्यान्वेषी काव्य साधक बताया। कन्हैयालाल सेठिया के सुपुत्र जयप्रकाश सेठिया ने भावुक होते हुए कहा कि आज का ये दिन उनको हमेशा याद रहेगा और जीवन में वे सदैव सेठिया के कार्यो को आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहेंगे।